*अध्ययन सामग्री
विषय- हिन्दी
स्नातक प्रतिष्ठा(खण्ड-3)
प्रश्न पत्र- षष्ठ
रूपक अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण
पदनाम- डॉ स्मिता जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एच डी जैन कॉलेज, आरा*
21:45 ✓

Scanned with CamScanner

रूपक —

उपमेय में उपमान का निषेध रहित आरोप रूपक है।

आरोप का अर्थ है एक वस्तु के साथ उसी वस्तु को उस प्रकार रखना कि दोनों अभिन्न मालूम हों। जैसे — 'मुख चन्द्र है' - यहाँ मुख में चन्द्र का आरोप किया गया है। मुख और चन्द्र के भेद को मिटा कर दोनों को सर्वथा एक कर दिया गया है। आरोप को अभेद और तादात्म्य भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

रूपक के तीन प्रमुख भेद हैं —

(1) निरंग
(2) सांग
(3) परम्परित

(क) निरंग रूपक —

जहाँ अंगों के बिना उपमान का उपमेय में आरोप हो, वहाँ निरंग रूपक होता है।
उसके दो भेद हैं —

① केवल या शुद्ध
② माला रूप

केवल या शुद्ध निरंग रूपक —

"प्रभुपति! वह मेरा प्राणप्यारा कहाँ है?
दुःख-जलनिधि-डूबी का सहारा कहाँ है?"

यहाँ दुःख में जलनिधि (समुद्र) का आरोप होने से निरंग रूपक अलंकार है।

मालारूप निरंग रूपक —

यदि एक उपमेय में अनेक उपमानों का आरोप हो तो मालारूप निरंग रूपक होता है।

"प्रेम की लहर, गंग रावरी लहर,
कलिकाल को कहर, जमजाल को जहर है।"

यहाँ एक गंगा की लहर में अनेक उपमानों का आरोप है। यह

पूरा कवित्त की मालारूप निरंग का उदाहरण है।

② सांग (सावयव) रूपक

अंगों सहित उपमान का उपमेय में आरोप सांग रूपक है।

सांग रूपक के दो भेद हैं —

(क) समस्तवस्तुविषय सांग रूपक

(ख) एकदेश विवर्ती

उदाहरण —

"बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा-नागरी"

यहां ऊषा में नागरी का आरोप, अम्बर में पनघट और तारा में घट (अंगों) के आरोप के साथ है, अतः समस्त वस्तुविषय सांग रूपक है।

③ परम्परित रूपक

जहाँ एक आरोप दूसरे आरोप का कारण हो वहाँ परम्परित रूपक होता है।

'दो आँसू-तारक चरण-नभ से अकस्मात ही टूट पड़े,
टपक पड़े कुमार-दृग से भी अश्रु-बिन्दु दो बड़े।'

यहाँ आँसू को तारक मानने में नेत्र को नभ मानना आरोप की सार्थकता के लिए आवश्यक है।

Scanned with CamScanner